CBSE Class 10th Hindi A
Sample Paper 01

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   कम उमर में विकसित अवचेतन मन का हमारे जीवन पर असर बिलकुल हाल में समझ में आया हो, ऐसा नहीं है। कोई 500 साल से कुछ धर्म-प्रचारकों में यह कहा जाता रहा है कि किसी भी बालक को हमें छह-सात साल की उमर तक के लिए दे दीजिए। वह बड़ा होने व बाद जीवन भर हमारा ही बना रहेगा। उन्हें पता था कि पहले सात साल में सिखाया गया ढर्रा किसी व्यक्ति की जीवन-राह तय कर सकता है। उस व्यक्ति की कामनाएँ और इच्छाएँ चाहे कुछ और भी हों, तो भी वह इस दौर को भूल नहीं पाता। क्या यह मान लें कि नकारात्मक बातों से भरे हमारे इस अवचेतन मन से हमें आज़ादी मिल ही नहीं सकती? ऐसा नहीं है। इस तरह की आजादी की अनुभूति हर किसी को कभी न कभी जरूर होती है। इसका एक उदाहरण है, प्रेम की मानसिक अवस्था। प्रेम में, स्नेह में अभिभूत व्यक्ति का स्वास्थ्य कुछ अलग चमकता हुआ दिखता है, उसमें ऊर्जा दिखती है।

   वैज्ञानिकों को हाल ही में पता चला है कि जो लोग रचनात्मक ढंग से सोचने की अवस्था में होते हैं, आनंद में रहते हैं, उनका चेतन मन 90 प्रतिशत सजग रहता है। चेतन अवस्था में लिए निर्णय और हुए अनुभव किसी भी व्यक्ति की मनोकामनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप होते हैं। तब मन अपने अवचेतन के प्रतिबंधक ढरों पर बार-बार वापस नहीं लौटता है, लेकिन यह रचनात्मक अवस्था सदा नहीं रहती। जल्दी ही अवचेतन कमान पर लौट आता है। मन का अवचेतन भाग अगर नए सिरे से, नए भाव से, सकारात्मक आदतें चेतन हिस्से से सीख सके तो इस समस्या का समाधान निकल आए।

   i. हमें नकारात्मक प्रतिबंधक ढरों से बचने के लिए क्या करना चाहिए?
   ii. किसी व्यक्ति को जीवन भर अपना बनाने के लिए धर्म प्रचारकों ने क्या सुझाव दिया?
   iii. इस सुझाव का क्या आधार है?

iv. लेखक ने अवचेतन मन की आजादी को किस उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है?
v. लेखक ने नकारात्मक बातों से भरे अवचेतन मन की समस्या को क्या समाधान सुझाया?
vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. उन्होंने मूर्ति को देखा और रुक गए। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
ii. जो छात्र प्रश्न पूछता है उसका ज्ञान बढ़ता है। (सरल वाक्य में रूपान्तरण कीजिए।)
iii. न ही वह मेरे घर आता है और न ही मैं उसके घर जाता हैं। (वाक्य-भेद बताइए।)
iv. आप सत्य के पक्षपाती हैं या असत्य के समर्थक? (वाक्य-भेद बताइए।)

3. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. बुलेटिन के लिए एक नोटिस बनाइए। (भाववाच्य में बदलिए।)
ii. सत्य बोलने की प्रेरणा दी गई थी। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)
iii. आप कर सकते हैं। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
iv. सारे स्कूल बन्द कर दिए जाएँ। (कर्तृवाच्य बनाइए।)

4. **रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए- (4)**

i. जिलाधिकारी की पहल पर ही इलाके के कुछ प्रमुख लोगों को बुलाया गया।
ii. जिसमें महाविद्यालय का प्रिंसिपल होने के नाते मैं भी शामिल था।
iii. वृद्ध डॉक्टर ने फार्मूला दिया।
iv. और मैंने सभी के सामने इस तरह रखा जैसे कि वह पंचायत का फैसला हो।

5. i. “वीर रस का स्थायी भाव लिखिए। **(4)**
ii. 'करुण रस' का एक उदाहरण दीजिए।
iii. 'क्रोध' किस रस का स्थायी भाव है?
iv. काव्यांश में कौन-सा रस है?

‘मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुस्करा कर जो भाग गया।'

Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

पान वाले के लिए यह एक मजेदार बात थी, लेकिन हालदार साहब के लिए चकित और द्रवित करने वाली। यानी वह ठीक ही सोच रहे थे। मूर्ति के नीचे लिखा 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल' वाकई कस्बे का अध्यापक था। बेचारे ने महीने-भर में

मूर्ति बनाकर पटक देने का वादा कर दिया होगा। बना भी ली होगी, लेकिन पत्थर में पारदर्शी चश्मा कैसे बनाया जाए,- काँचवाला, यह तय नहीं कर पाया होगा या कोशिश की होगी और असफल रहा होगा। या बनाते-बनाते 'कुछ और बारीकी' के चक्कर में चश्मा टूट गया होगा या पत्थर का चश्मा अलग से बनाकर फिट किया होगा और वह निकल गया होगा।

i. मूर्ति के नीचे क्या लिखा था?
ii. मोतीलाल कौन था और उसने क्या वादा किया?
iii. पान वाले के लिए क्या मजेदार बात थी?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. 'बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई' कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

ii. नवाब साहब और लेखक के व्यवहार के आधार पर किसे अच्छा ठहरा सकते हैं? लखनवी अंदाज़ पाठ के आधार पर बताइए।

iii. फ़ादर बुल्के ने भारत में रहते हुए जो कार्य किए उन्हें लिखिए।

iv. लेखिका मन्नू भंडारी और उसके भाई-बहनों का सारा लगाव किसके साथ था और क्यों ?

v. मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखे।

8. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (6)**

बिहँसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महाभट मानी ।।
पुनि-पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फैंक पहारू॥
इहाँ कुम्हड़बतियाँ कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कुछ कहहु सह रिस रोकी ।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ।।
बधे पापु अपकीरति हारे । मारतहू पा परिअ तुम्हारे ।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ।।

i. 'कुम्हड़बतिया' का उदाहरण क्यों दिया गया है ?
ii. लक्ष्मण के हँसने का क्या कारण है?
iii. 'मुनीसु' कौन हैं ? लक्ष्मण उनसे बहस क्यों कर रहे हैं?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. अट नहीं रही है कविता का मूल भाव स्पष्ट करें ?

ii. बालक कवि को कैसे देख रहा है और क्यों ?

iii. जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया का भावार्थ छाया मत छूना कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

iv. कन्यादान' कविता में बेटी को अन्तिम पूँजी' क्यों कहा गया है?

v. संगतकार में त्याग की उत्कट भावना भरी है-पुष्टि कीजिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

1. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकरे सिसकना क्यों भूल जाता है?
2. रानी एलिज़ाबेथ के आने की खबर से भारतीय अखबारों में क्या-क्या छप रहा था ?
3. सिक्किमी नवयुवक ने स्नोफ़ॉल की कमी का क्या कारण बताया तथा कटाओं के विषय में क्या जानकारी दी? साना-साना हाथ जोड़ि पाठ के आधार पर बताइए।

Section D

11. **विज्ञापन की दुनिया** विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। **(10)**

- विज्ञापन का युग,
- भ्रमजाल और जानकारी,
- सामाजिक दायित्व।

OR

प्रकृति का प्रकोप विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- प्रकृति का दानव स्वरूप,
- कारण,
- समाधान।

OR

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम : अनुकरणीय जीवन विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व,
- अनुकरण करने योग्य जीवन,
- उपसंहार।

Material downloaded from myCBSEguide.com.

12. चेन्नई निवासी मित्र गोविंदन को ग्रीष्मावकाश में रानीखेत-नैनीताल की यात्रा के लिए आमंत्रित कीजिए। **(5)**

OR

अपने विदेशी मित्र को अपने जीवन का लक्ष्य बताते हुए पत्र लिखिए।

13. राजा फिल्म के.लिए लड़के व लड़कियों की प्रतिभा को परखने हेतु 25-50 शब्दो मे एक विज्ञापन तैयार कीजिए | **(5)**

OR

किसी राज्य के पर्यटन विभाग की ओर से राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 25-50 शब्दों का एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

CBSE Class 10th Hindi A
Sample Paper 01

Answer

Section A

1. i. हमें नकारात्मक प्रतिबंधक ढर्रों से बचने के लिए रचनात्मक प्रवृति व सोच को अपने अन्दर विकासित करना चाहिए जिससे सकारात्मकता का हमारे जीवन में प्रादुर्भाव हो सके।
   ii. धर्म प्रचारकों ने सुझाव दिया कि बालक को छह-सात वर्ष की आयु तक धार्मिक गतिविधियों से जोड़कर रखना चाहिए ताकि ये प्रवृतियाँ उसके अवचेतन मन में स्थाई हो सकें।
   iii. इस सुझाव का आधार यह है कि मनुष्य को अपने जीवन के प्रारंभिक छह-सात साल में जो कुछ सिखाया जाता है वह किसी व्यक्ति की जीवन की राह तय कर सकता है। उस व्यक्ति की कामनाएँ और इच्छाएँ चाहे कुछ और भी हों तो भी वह इस दौर को भूल नहीं पाता और जीवनपर्यंत उस दौर की सीख के अनुसार अपने आचरण को बनाये रखता है ।
   iv. लेखक ने अवचेतन मन की आजादी को प्रेम की मानसिक अवस्था द्वारा स्पष्ट किया है। प्रेम में, स्नेह में अभिभूत व्यक्ति का स्वास्थ्य कुछ अलग चमकता हुआ दिखता है, उसमें ऊर्जा दिखती है अर्थात उसमें सकारात्मकता का संचरण होता है ।
   v. लेखक ने सुझाया कि मन का अवचेतन भाग अगर नए सिरे से, नए भाव से, सकारात्मक आदतें निरंतर अभ्यास द्वारा मस्तिष्क के चेतन हिस्से से सीख सकें तो इस समस्या का स्थाई समाधान निकल आए।
   vi. चेतन और अवचेतन मन

Section B

2. i. जैसे ही उन्होंने मूर्ति देखी, वे रुक गए।
   अथवा
   जब उन्होंने मूर्ति देखी तब वे रुक गए।
   ii. प्रश्न पूछने वाले छात्र का ज्ञान बढ़ता है।
   iii. संयुक्त वाक्य है।
   iv. संयुक्त वाक्य है।
3. i. बुलेटिन के लिए एक नोटिस बनाया जाए।
   ii. (उसे) सत्य बोलने को प्रेरित किया गया था।
   iii. आपके द्वारा किया जा सकता है।
   iv. सारे स्कूलों को बंद कर दिया जाए।
4. i. **जिलाधिकारी की-** जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक।
   ii. **मैं-** पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'शामिल था' क्रिया का कर्ता।

पुरुषवाचक सर्ववनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक,' शामिल था' क्रिया का करता।

iii. **वृद्ध-** गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'डॉक्टर' विशेष्य का विशेषण।
गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, विशेष्य- 'डॉक्टर'।

iv. **इस तरह-** रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'रखा' क्रिया का क्रियाविशेषण।

5. i. वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' है |

ii. 'कौरवों को श्राद्ध करने के लिए, या कि रोने को चिता के सामने, शेष अब है रह गया कोई नहीं, एक वृद्धा, एक अंधे के सिवा।'

iii. क्रोध 'रौद्र रस' का स्थायी भाव है |

iv. काव्यांश में वियोग श्रृंगार रस है |

Section C

6. i. मूर्ति के नीचे लिखा था 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल'।

ii. मोतीलाल कस्बे के एक विद्यालय में कला विषय का अध्यापक था और उसने जैसे-तैसे मूर्ति एक माह में बना कर देने का वादा किया था।

iii. पान वाले के लिए मजेदार बात यह थी कि मूर्तिकार मूर्ति पर चश्मा लगाना भूल गया था क्योंकि वह कैप्टन की भावनाओं से अपरिचित था उसे यह बात अजीब लगती थी और लोगों की उत्सुकता देख कर पानवाले को बड़ा मजा आता था।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. प्रायः मनुष्य के मन में अपने जीवन के अंत तक एक चिंता बनी रहती है कि बुढ़ापे में उसके दिन कैसे कटेंगे परन्तु भगत के मन में इस प्रकार के विचार कभी भी नहीं आए | बुढ़ापे में भी उनके नेम-व्रत, संध्या-स्नान चलते ही रहे | खेती का काम करना, दोनों वक्त नियम से गीत ध्यान करना उन्होंने कभी नहीं छोड़ा | बुखार आने पर भी गंगा स्नान के लिए गए | यहाँ तक कि अपने अंत समय में भी उन्होंने संध्या समय कबीर के पद गाए और अपने पंजर को छोड़ कर चले गए | इस प्रकार मृत्यु का भय भी उन्हें अपने कर्मो से विचलित नहीं कर पाया | अतः यह कहना उचित है कि उनकी मृत्यु उनके ही अनुरूप हुई |

ii. 'लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर नवाब साहब व लेखक मुख्य पात्र हैं। पूरी कहानी इन्हीं पर घूमती है। इस पाठ में नवाब साहब के सामंती वर्ग के बनावटी पन पर कटाक्ष किया गया है । ऐसे लोग यथार्थ से दूर केवल दिखावे के लिए अपनी शान का प्रदर्शन करते हैं। परंतु दिखावे के साथ साथ नवाब साहब बड़े ही शरीफ, सहज व विनम्र व्यक्ति हैं क्योंकि खीरा खाने से पहले वह लेखक को बड़ी तहजीब से आमंत्रित करते हैं लेकिन लेखक में ऐंठ और अकड़ है। वे खीरा खाना तो चाहते हैं लेकिन एक बार मना करने पर अपनी बात पर डटे रहे। उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन है। उनका व्यवहार नवाबों की तरह विनम्र नहीं है। इसी कारण लेखक की अपेक्षा नवाब साहब का व्यवहार अधिक सहज है।

iii. फादर बुल्के भारत में आकर सबसे पहले 'जिसेट संघ' में दो साल पादरियों के बीच धर्माचार् की पढ़ाई की। कोलकाता से बी. ए किया और इलाहाबाद से एम. ए .। प्रयाग विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग में रह कर 1950

में 'राम कथा: उत्पत्ति और विकास' पर शोध प्रबंध पूरा किया, फिर मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का हिंदी रूपांतर 'नील पंछी' के नाम से किया। 'परिमल 'जैसी साहित्यिक संस्था की सदस्यता भी बखूबी निभाई। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बाद में सेंट जेवियरस कॉलेज रांची में हिंदी तथा संस्कृत के विभागाध्यक्ष हो गए। यहीं इन्होंने प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिंदी कोश तैयार किया और बाइबिल का भी अनुवाद किया। इस प्रकार भारत में रहते हुए फादर कामिल बुल्के ने अनेक प्रशंसनीय कार्य किए।

iv. लेखिका और उसके सभी भाई-बहनों का लगाव अपनी माँ के साथ था क्योंकि माँ स्वभाव से बहुत सरल और शांत थी। वे धैर्य और त्याग की पराकाष्ठा थीं | घर में उनकी उपेक्षा होती देखकर लेखिका और उनके भाई-बहनों का सारा लगाव उनसे ही था | ये लगाव भी सहानुभूति से ही उपजा था |

v. बिस्मिल खां अपने मज़हब की परम्पराओं के प्रति शालीन और सजग थे | मुहर्रम और शहनाई में आपस में गहरा संबंध रहा है | मुहर्रम के समय खाँ साहब हजरत इमाम हुसैन एवं उनके वंशजों के प्रति पूरे दस दिनों तक शोक मनाते थे। इन दिनों में खां साहब और उनके परिवार का कोई भी सदस्य न तो शहनाई बजता था और न ही किसी संगीत कार्यक्रम में शिरकत ही करता था | इन दिनों संगीत की मनाही थी |मुहर्रम की आठवीं तारीख को बिस्मिल्ला ख़ाँ खड़े होकर दाल मंडी में फातमान के लगभग आठ किलोमीटर की दूरी तक रोते हुए नौहा बजाते पैदल ही जाते थे। उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में भीगी रहती थीं । उस समय एक महान संगीतकार का सहज मानवीय रूप देखकर, उनके प्रति अपार श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी।

8. i. 'कुम्हड़बतिया' (कोंहरा का बतिया यानी कोंहरा का छोटा रूप) उँगली दिखाने से सड़ जाता है | यहाँ परशुराम लक्ष्मण को तुक्छ समझ कर बार-बार उँगली दिखा रहे थे इसलिए यहाँ कुम्हड़बतिया का उदाहरण दिया गया है |

ii. लक्ष्मण के हँसने का कारण परशुराम की गर्व भरी बातें एवं खुद को परशुराम द्वारा हलके में लेना है ।

iii. परशुरामजी मुनीसु हैं। उन्होंने शिव-धनुष के टूट जाने पर राम को बुरा-भला कहा और बार-बार धनुष दिखाकर दंड देने की बात कही, फलस्वरूप लक्ष्मण अपना पक्ष रखते हुए उनसे बहस कर रहे हैं।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. 'अट नही रही है कविता में प्रकृति में चारों ओर सुंदरता व्याप्त है। कविता के मूल भाव के अनुसार फाल्गुन की सुंदरता घर-मन और तन में समाये नहीं समाती है। वृक्ष लाल और हरे रंग से ढके हुए है | आकाश विभिन पक्षियों से अटा पड़ा है | घर-घर में सुगंधित वायु व्याप्त है। चारों ओर सिर्फ सुंदरता ही सुंदरता है जो मानव मन को आह्लादित कर रही है और कही नहीं समा रही है ।

ii. बालक कवि को कनखियों से या तिरछी नजरों से देख रहा है। वह कवि से आँखें बचाकर चुपके से देखने की कोशिश करता है परन्तु नज़रें मिलते ही संकोचवश नज़रें हटा लेता है क्योंकि वह कवि से अपरिचित है और पिता के रूप में उसे नहीं पहचानता है। अब तक सिर्फ माँ से ही उसका परिचय था इसलिए कवि के सामने आते ही एकटक देखता ही रहता है और आंखें मिल जाने पर अपनी नजरें चुरा लेता है।

iii. इस पंक्ति का भावार्थ है कि मनुष्य जीवन भर धन- दौलत, यश, वैभव, सम्मान, बड़प्पन आदि के पीछे भागता रहता है, ताकि वह इन्हें अधिकाधिक मात्रा में एकत्र कर सकें। वह इन्हीं सब को सुख समझता है और इनको पाने की लालसा में भ्रमित हो जाता है। मनुष्य के पास जो है और जो नहीं, इसका वह जितना तुलनात्मक अध्ययन करेगा इतना ही भ्रमित होगा। बड़प्पन का एहसास केवल मृगतृष्णा है जिसमें मनुष्य असमंजस की स्थिति में फँस

जाता है।

iv. 'कन्यादान' कविता में बेटी को अंतिम पूँजी इसलिए कहा गया है कि वह माता-पिता की लाड़ली होती है। उसके ससुराल जाने के बाद माँ बिलकुल खाली हो जाएगी। बेटी पर उसका सारा ध्यान केन्द्रित है। यह उसके जीवन की संचित पूँजी है। जब वह कन्यादान कर देगी तो उसके पास कुछ न बचेगा | माँ अपनी बेटी के सबसे निकट और सुख-दुख की सहयोगिनी होती है। इसी से माँ उसे अपनी अंतिम पूँजी मानकर अत्यंत भावुक हो जाती है।

v. संगतकार मुख्य गायक की गरजदार आवाज़ में अपनी गूँज मिलाता है। सदा मुख्य गायक के सहायक के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है | वह मुख्या गायक के बुझते स्वर को सँभाले रहता है। ऊँचा गाने की प्रतिभा होने पर भी वह मुख्य गायक के स्वर से अपनी स्वर नीचा रखकर उसका सम्मान करता है जो संगतकार की मनुष्यता है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना इसलिए भूल जाता है क्योंकि बच्चों को अपनी उम्र के बच्चों के साथ ही खेलना अच्छा लगता है। वह अपने मित्रों के साथ उन सब खेलों का आनंद लेना चाहता होगा। मित्रों के साथ खेलते समय यदि वह रोता है तो उसके मित्र उसकी हंसी बनाते हैं और उसे अपने साथ नही खिलाते।

ii. रानी एलिजाबेथ के आने की खबर से भारतीय अखबारों में निम्नलिखित खबर छप रहे थे :-

i. रानी ने एक हल्के नीले रंग का सूट बनवाया है जिसका रेशमी कपड़ा हिन्दुस्तान से मँगवाया गया है ।

ii. उस सूत बनवाने में करीब चार सौ पौंड खर्चा सौ पौंड का खर्चा आया है ।

iii. रानी एलिजाबेथ की जन्म-पत्री भी छपी है ।

iv. प्रिंस फिलिप के कारनामे, नौकरों, बाबरचियों,खानसामों,अंगरक्षकों की पूरी-पूरी जीवनियाँ छप रही थी |

v. यहाँ तक कि शाही महल में रहने वाले, पलने वाले कुत्तों की तस्वीरें छप रही थी | ।

iii. सिक्किमी नवयुवक ने लेखिका को स्नोफ़ॉल' कम होने का प्रमुख कारण बढ़ता हुआ प्रदूषण बताया। उसने लेखिका को बताया कि प्रदूषण के अन्य बुरे प्रभाव भी यहाँ महसूस किए जा रहे हैं। बढ़ते वायु-प्रदूषण के कारण लोगों को श्वास लेने में कठिनाई हो रही है। स्वच्छ वायु न मिलने से लोग बीमार पड़ रहे हैं। यहाँ पर वायु-प्रदूषण के साथ-साथ जल-प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। शीतल और पवित्र नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं। बर्फ तो नाम मात्र की रह गई है। परिणामस्वरूप पेट की अनेक बीमारियों को सहना पड़ता है। गाइड ने साथ ही 'कटाओ' के विषय में बताया कि 'कटाओ' 'टूरिस्ट प्लेस' नहीं है। 'कटाओ' का व्यवसायीकरण नहीं हो पाया है इस कारण यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है।यह स्विटज़रलैंड की तरह सुंदर है। यहाँ कोई दुकान भी नहीं खुली है। अतः यहाँ के प्रकृति को एक तरह से सौंदर्य का वरदान प्राप्त हुआ है। सब तरफ सौंदर्य बिखरा पड़ा है।

Section D

11. **विज्ञापन का युग:-** आधुनिक युग प्रतियोगिता का युग है। उत्पादक को अपनी बनाई वस्तु की माँग उत्पन्न करना ही जरूरी नहीं होता, बल्कि वर्तमान को भी बनाए रखना उतना ही आवश्यक होता हैं। इन दोनों कार्यों के लिए वस्तु की उपस्थिति तथा उसके विभिन्न प्रयोग या उसकी उपयोगिता के विषय में उपभोक्ता को विज्ञापन द्वारा सूचित किया जाता है। विज्ञापन को यदि वर्तमान व्यापारिक संसार की रीढ़ कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। विज्ञापन वह कला है जिसके द्वारा

किसी भी वस्तु को इस प्रकार विज्ञापित किया जाता है कि लोग उसे पहचान जाएँ और उसे अपना लें | **भ्रमजाल और जानकारी:-** आज जब हम अपने चारों ओर दृष्टि डालते हैं तो अपने आपको विज्ञापनों से घिरा पाते हैं। विज्ञापन को व्यापार की आत्मा कहना अत्युक्ति न होगी | विज्ञापन साधनों की अपेक्षा दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले विज्ञापन विभिन्न प्रकार की विचित्रताएँ लिए दर्शकों को अपने मोह जाल से फँसा लेते हैं। वस्तुत: दूरदर्शन पर प्रसारित होने । वाले विज्ञापनों का करिश्मा ही निराला है। रेडियो पर भी अनेक विज्ञापन प्रसारित होते हैं। कुल मिलाकर विज्ञापन कला ने आज व्यापार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया | आप जहाँ जाएँ, वहाँ विज्ञापनों की ध्वनियाँ आपके कानों में टकराती रहेंगी। भले ही आप अपना रेडियो न चलाएँ, आप पान की दुकान पर खड़े हैं-रेडियो सुनाई देता है-“पेश किया जाए मुगले-ए-आजम पान मसाला ।" किसी पार्टी में विभिन्न प्रकार की साड़ियों में सजी सुन्दर गुनगुना उठेंगे। ‘रूप-सँवारे रूप निखारे'-कहियो अपने सैयां जी से, रूप की साड़ी लाएँ, रूप का सागर। आप बस में । जा रहे हैं-तभी किसी की जेब कट गई। आपको याद आता है-“अरे, पकड़-पकड़ो, मेरी जेब कट गई, कटी नहीं फट गई। कहा था मुनीम धागे से सिलाई करवाये-पैसे गिर गये हों तो उठा लो न’ सड़क के चौराहे पर पहुँचे-"अरे-अरे देखकर नहीं चलते-क्या सड़क आपकी हैं-नहीं तो आपकी हैं-जेब्रा क्रॉसिंग पर पैदल पथ वालों को पहले चलने का हक है।" अब तो दूरदर्शन विज्ञापन-बाजी में बाजी मार रहा है। विज्ञापन के नए-नए रूप इसमें दिखते हैं। निरमा, रिन, व्हील आदि अनेक धुलाई के पाउडर, अनेक प्रकार के साबुन, अनेक प्रकार की चाय, अनेक प्रकार की साड़ियाँ, जूते, चप्पल, मंजन, क्रीम,आलू के चिप्स, शीतल पेय आदि के विज्ञापन गज़ब ढा रहे हैं। ये दर्शकों को मुग्ध करने के साथ ही उनकी जेब ढीली कराने में समर्थ हो रहे हैं। जो भी विज्ञापन आकर्षक होता है, उसका नाम लोगों की जुबान पर चढ़ जाता है, जिससे विज्ञापित वस्तुओं की माँग में वृद्धि हो जाती है। इससे उत्पादों को लाभ होता है। **सामाजिक दायित्व:-** रेडियो और दूरदर्शन द्वारा बहुत-सी वस्तुओं का विज्ञापन बढ़ा-चढ़ा कर दिया जाता है जिससे उपभोक्ता भ्रम में पड़ जाता है। इसके साथ ही मनचाहे संगीत कार्यक्रम में हर गीत के बाद विज्ञापन मन को खिन्न कर देता है। हमें विज्ञापन देखकर जानकारी अवश्य लेनी चाहिए परन्तु विज्ञापनों को देखकर वस्तुएँ नहीं लेनी चाहिए | विज्ञापनों में जो दिखाया जाता है, वे शत-प्रतिशत सही नहीं होता | विज्ञापन हमारी सहायता करते हैं कि बाज़ार में किस प्रकार की सामग्री आ गई है | हमें विज्ञापनों द्वारा वस्तुओं की जानकारियाँ प्राप्त होती है | विज्ञापन ग्राहक और निर्माता के बीच कड़ी का काम करते हैं | हमें चाहिए कि हम पूरे सोच-समझकर उत्पादों का प्रयोग करें | विज्ञापन हमारी सहायता अवश्य कर सकते हैं परन्तु कौनसा उत्पाद हमारे काम का है या नहीं, ये हमें तय करना चाहिए परन्तु वे हमारे उपयोग न आकर हमारा समय और पैसा दोनों बर्बाद करें, ये हमें अपने साथ नहीं होने देना चाहिए |

OR

प्रकृति की रमणीयता और उसका नैसर्गिक सौन्दर्य बरबस ही हमारे मन को मोह लेता है। सुखद अहसास दिलाने वाली प्रकृति का दानव स्वरूप भी है जिसके धारण कर लेने पर चारों ओर सिर्फ विनाश होता है। बाढ़, भूकम्प, तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट, सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बादलों का फटना ये सभी प्रकृति के दानव स्वरूप के प्रतिरूप हैं। प्रकृति के प्रकोप का जिम्मेदार मनुष्य ने ही प्रकृति को अपना सुकुमार और नैसर्गिक रूप त्याग करके दानव रूप धारण करने के लिए विवश किया है। मनुष्य प्रारम्भ से ही अपनी सुख-सुविधाओं के लिए प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग करता रहा है पहले वह प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करता था प्रकृति उसे जो स्वेच्छा से देती थी मनुष्य उसे स्वीकार कर लेता था जब मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ने लगी तो उसने प्रकृति के उपादानों का प्रयोग करने के अलावा उससे छेड़छाड़ करना भी

आरम्भ कर दिया।।

कारखानों-वाहनों के धुएँ ने वायु को, गन्दे रासायनिक तत्वों और गन्दे मल-युक्त जल को स्वच्छ नदियों में मिलाकर जल को दूषित कर दिया। आधुनिक तकनीक से विकसित उपकरणों ने मनुष्य को जहां राहत प्रदान की है वहीं प्रकृति को खोखला बना दिया है। मौसम चक्र परिवर्तित हो गये, धरती का तापमान निरंतर बढ़ने से सर्दियों में आसमान में फैलने वाली धुंध की चादर का स्थान आज प्रदूषण से ढके बादलों ने ले लिया है ऐसे वातावरण ने हृदय ,श्वास संबंधी बीमारियों को जन्म हुआ ।

परिणामस्वरूप प्रकृति ने भी अपने सुकुमार रूप को त्यागकर दानव रूप धारण कर लिया और अब सबको सबक सिखाने के लिए चारों ओर विनाश करती है। जिसका जीता-जागता उदाहरण उत्तराखण्ड त्रासदी हैं।

यदि मनुष्य प्रकृति के इस प्रकोप से बचना चाहता है तो उसे सोच-समझकर प्रकृति के उपादानों का प्रयोग करते हुए प्रकृति के संतुलन को कायम रखना होगा। इसके लिए जनसंख्या के बढ़ते स्तर को घटाना होगा। हम अधिकाधिक वृक्ष लगाएँ, जल और वायु को दूषित होने से रोकें और प्रकृति के तंत्र के साथ छेड़-छाड़ न करें। पर्यावरण संरक्षण के लिए जन-जागृति के कार्यक्रम चलाये जाए, वृक्षारोपण, जल संसाधनों की सफाई, कूड़े-कचरे का सही रूप से निस्तारण, जैसी आदतों का विस्तार करना होगा तभी प्रकृति को सुरक्षित रख सकते हैं।

OR

किसी भी देश की प्रजातंत्रीय व्यवस्था में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिष्ठित पद राष्ट्रपति का होता है। इस पद पर सुशोभित व्यक्ति देश के प्रतिनिधि के तौर पर जाना जाता है। देश की आजादी के बाद अब तक इस सर्वोच्च पद को अनेक महान विद्वानों, दार्शनिकों, शिक्षाविदों और साहित्यकारों ने सुशोभित किया है। महापुरुषों की इस श्रृंखला में विश्व विख्यात वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का नाम भी शामिल हैं। जिन्होंने अपनी कार्य-कुशलता, विनम्रता, अनुभव से इस पद को गौरान्वित किया ।

इनका पूरा नाम डॉ. अबुल पाकिर जैनुलअब्दीन अब्दुल कलाम था। इनका जन्म तमिलनाडु की पवित्र नगरी रामेश्वरम में 15 अक्तूबर सन् 1931 ई. को एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था । उनके पिताजी नावों को किराए पर देने का काम करते थे। इस प्रकार इनका प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय था लेकिन इन्होंने कभी हर नहीं मानी। डॉ. कलाम बचपन से ही आत्मनिर्भर थे। जिस उम्र में बच्चों को खेल-कूद के अलावा और कुछ सूझता नहीं, उस उम्र में भी वह अखबार बेचकर अपने परिवार की आर्थिक मदद करते थे। डॉ. कलाम ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रामनाथपुरम के एक मिशनरी विद्यालय में प्राप्त की। उसके बाद तिरुचिरापल्ली के जोसेफ़ कॉलेज से उन्होंने इंटरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त करके विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके पश्चात उन्होंने चेन्नई के मद्रास इंस्टीट्यूट आफ टैक्नोलॉजी से एरोनाटिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1958 में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन का आरंभ किया।

पाँच वर्ष तक उस संस्थान में कार्य करने के बाद 1963 में वे भारत अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में आ गए। यहाँ रहकर उन्होंने भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान के रूप-स्वरूप, विकास और प्रबंधन पर काम किया। प्रारम्भ में उन्हें असफलताओं का सामना करना पड़ा किन्तु इन्होंने कभी हार नहीं मानी और इसी के बाद पृथ्वी के निकट कक्षा में रोहिणी उपग्रह का सफल प्रक्षेपण किया। 1982 में डॉ. कलाम वापस डी.आर.डी.ओ. (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) में आ गए। यहाँ रहकर उन्होंने स्वदेशी प्रक्षेपास्त्रों के विकास के लिए बहुत काम किया।

देश के प्रति उनकी सेवाओं के कारण 1997 में उन्हें भारत के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। जुलाई 1992 से दिसंबर 1999 तक उन्होंने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार और रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग के सचिव के पद पर कार्य किया। 2001 तक वे भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार पद पर आसीन रहे। उनकी देखरेख में अग्नि, आकाश, पृथ्वी, नाग, त्रिशूल आदि प्रमुख प्रक्षेपास्त्रों का सफल परीक्षण हुआ। 25 जुलाई 2002 को भारत के बारहवें राष्ट्रपति बने तत्पश्चात इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश को समर्पित कर दिया।

डॉ. अब्दुल कलाम शाकाहारी थे और भारतीय शास्त्रीय संगीत में गहरी रुचि रखते थे। वे एक लेखक भी थे। उनकी दो पुस्तकें 'इंडिया 2020 और ' विंग्स ऑफ़ फायर' बहुत प्रसिद्ध हैं। श्रीमद्भगवतगीता उनकी प्रिय पुस्तक हैं। नारायण गुरु को अपना आदर्श मानने वाले अब्दुल कलाम भारतीय मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा रखते थे। कलाम को बच्चों से बातें करना और खेलना बेहद पसंद था। उन्हें प्रकृति से, पेड़-पौधों से व जीव जन्तुओं से भी बहुत प्यार था। वे अविवाहित थे। केवल निष्ठा व कर्म ही उनके साथी थे। डॉ. अब्दुल कलाम पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने राष्ट्रपति भवन में एक छोटा-सा चिड़ियाघर ही बना लिया था और जिसकी देखभाल वे स्वयं किया करते थे। कलाम अपने वेतन का बहुत बड़ा हिस्सा जनकल्याण के लिए लगाते थे ,इन्होंने कभी भी निजी स्वार्थों को महत्त्व नहीं दिया । कलाम का व्यक्तित्व विज्ञान और कला का अभूतपूर्व संगम था ,वे एक कुशल वक्ता भी थे और अपने अनुभवों और विचारों को इसप्रकार अभिव्यक्त करते थे कि श्रोता मंत्र-मुग्ध हो जाते थे। कलाम का सम्पूर्ण जीवन एक खुली किताब की भाँति है जो चिरकाल तक आगे आने वाली पीढ़ी का मार्ग आलोकित करती रहेगी ।

12. 421, दशरथ,
नई दिल्ली-18
दिनांक : 17 जनवरी, 2019
प्रिय मित्र गोविंदन
सादर नमस्कार,
आशा है कि तुम सपरिवार कुशल से होगे। कल ही तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गयी है और तुम्हारा विद्यालय 30 जनवरी तक बन्द हो गया है। मेरी तथा मेरे घर के सभी सदस्यों की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि तुम्हें कुछ दिनों के लिए यहाँ बुलाएँ, परंतु तुम्हारी पढ़ाई का विचार कर ऐसा नहीं कर पाए। अब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है और विद्यालय बंद हो गया है अतः अब तुम्हें यहाँ आने में कोई दिक्कत नहीं होगी । इस बार हमने रानीखेत और नैनीताल की यात्रा का कार्यक्रम बनाया है। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य मन को लुभाने वाला है तथा झीलें भी बहुत बड़ी-बड़ी हैं। आपके चेन्नई में यह सब कहाँ देखने को मिलता है। इस मौसम में रानीखेत और नैनीताल की सुंदरता उस समय कई गुना बढ़ जाती है जब वहाँ बर्फ गिरती है। सैलानी खूब जी भर कर उस बर्फ में खेलते हैं और आनंद उठाते हैं। मैंने और भी कई पुराने मित्रों को निमंत्रित किया है वे सभी आने के लिए तैयार हैं बस तुम्हारी हाँ का इंतजार है।
प्रिय मित्र, मुझे पूरा विश्वास है कि तुम निश्चित रूप से मेरे निमंत्रण को स्वीकार करोगे | हम सभी तुम्हारी हाँ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैंने कई योजनाएँ बनाई है | इस बार तुम जरूर आना क्योंकि शायद मैं आगे की पढ़ाई के लिए विदेश चला जाऊँगा। मेरी बहुत इच्छा है कि हम सभी पुराने मित्र एक बार अवश्य मिलें। आने से पूर्व यहाँ पहुँचने की तिथि से अवगत कराना जिससे मैं तुम्हें लेने स्टेशन आ सकूँ। अपने आने की सूचना यथाशीघ्र भेजना।

तुम्हारा मित्र
बलवंत

OR

दक्षिण पुरी,
नई दिल्ली
२४ मार्च २०१९
प्रिय मित्र राकेश,
सप्रेम नमस्कार
आज यह पत्र मैंने तुम्हें अपने दिल की बात बताने के लिए लिखा है जिसके विषय में मैंने किसी को भी नहीं बताया है। हालांकि तुम्हारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने का स्वप्न साकार होने की स्थिति में है।
प्रिय ! मेरे जीवन का एक स्वप्न है जिसे मैं येन-केन प्रकारेण साकार और सार्थक करना चाहता हूँ। मैं देखता हूँ कि संसार में धन कमाने के बहुत से व्यवसाय हैं परन्तु जब मैं डॉक्टरों के शुभ कार्य को देखता हूँ तो मेरी डॉक्टर बनने की आकांक्षा और तीव्र हो जाती है। डॉक्टर जब रोते हुए किसी बीमार को सान्त्वना देकर परामर्श देकर उसके रोग का इलाज कर उसे नवजीवन प्रदान करता है तब उसके चेहरे पर जो सुकून और खुशी दिखाई देती है उसे देख कर तो मेरी इच्छा होती है कि मैं भी डॉक्टर बनूँ।
अतः एम.बी.बी.एस. में प्रवेश पाने के लिए मैं अध्ययनरत हूँ। सफलता मिलने पर सूचित करूँगा।
शुभकामनाओं का अभिलाषी
आपका अभिन्न सुहृद्
महेश

13.

सुनहरा मौका

चूक न जाना !

क्या आप अभिनय में रुचि रखते हैं और इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं तथा फिल्मों में आना चाहते हैं?

- अपनी कला को एक नई पहचान दें
- अपने सपनों को साकार करें

तो आइए और **"राजा"** फिल्म में अभिनय करने के लिए अपनी प्रतिभा सिद्ध कीजिए।
ऑडिशन दिनांक २२ फरवरी,२०१९ को प्रातः 10 बजे से प्रारंभ
ऑडिशन स्थान- प्रथम तल, द्वारका सेक्टर - 8, फोन : 884545XXXX

OR

देवभूमि उत्तराखंड में आपका स्वागत है!

हरियाली यहाँ अपार है, बर्फ का अंबार है।

देवों की महिमा का आधार है, प्रकृति लुटाती जहाँ प्यार है।

उत्तराखंड राज्य पर्यटन विभाग की ओर से आप सबका हार्दिक स्वागत है।

सेवा का मौका दें और उत्तराखंड की संस्कृति को जानें

टोल फ्री नं.-१८०० १८० ####